रात का गीत (1 नवम्बर)

यशायाह 54:10 चाहे पहाड़ हट जाएं और पहाड़ियां टल जाएं, तौभी मेरी करूणा तुझ पर से कभी न हटेगी, और मेरी शान्तिदायक वाचा न टलेगी, यहोवा, जो तुझ पर दया करता है, उसका यही वचन है ।

कितने अदभुत तरीके **से परमेश्वर ने अपने लोगों का मार्गदर्शन किया है! उनके बच्चे निरंतर उनकी देखभाल में हैं। कोई भी अच्छी वस्तु को उन्होंने** इनसे **रोक के नहीं रखी है, और इनके लिए सभी बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है, यदि वे** आज्ञाकारी रहें। **जिस किसी ने भी** अनेक **सालों में परमेश्वर पर भरोसा किया होगा, उनमें से कौन होगा जिसने धुप और छाया के माध्यम से, मुस्कान और आंसू के माध्यम से,** सुखदाई जल के झरने **और तूफान और आंधी के माध्यम से उनके बहुमूल्य वादों की** सत्यता और परमेश्वर की स्थाई विश्वसनीयता को न सिद्ध किया होगा ! **निश्चय "जितनी भलाई की बातें हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमारे विषय में कहीं उन में से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही" (यहोशू 23:14); हमारे जीवन के छोटे से छोटे और बड़े से बड़े मामलों में उन्होनें** हमेशा हमारे

कल्याण **का** विशेष **ध्यान रखा है।** हमारे लिये हर बादल में आशा की सुनहरी दामिनी भी छिपी रहती है! **`Z'14-280` R5538:3 (Hymn 63) आमीन**

रात का गीत (2 नवम्बर)

यशायाह 14:7 "अब सारी पृथ्वी को विश्राम मिला है, वह चैन से है; लोग ऊंचे स्वर से गा उठे हैं"।

एक स्थिर राज्य की आशा के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करो, जहाँ राजा धर्म से राज्य करेंगें और राजकुमार न्याय से हुकूमत करेंगे (यशायाह 32:1; नीतिवचन 8:15)। और उनकी प्रभुता में सारी पृथ्वी को विश्राम मिलेगा (यशायाह 14:7)। यह वही राज्य है जिसके लिए भविष्यद्वक्ता ने ऐलान किया है हाग्गै 2:7 वचन में "सभी जातियों की मनभावनी वस्तुएँ "; वाकई में ये राज्य सभी लोगों के लिए मनभावना होगा और एक बार स्थापित होने के बाद इसके आशीर्वाद को पूरी दुनिया महसूस करना शुरू कर देगी। हाँ, सचमुच में, "सभी देशों की मनभावनी वस्तुएँ "आ जाएंगी - जीवन और स्वास्थ्य और शांति और समृद्धि और अच्छे सरकार की आशीषों के रूप में। `Z'02-234` R3053:4 (Hymn 156) आमीन

रात का गीत (3 नवम्बर)

भजन संहिता 55:17 सांझ को, भोर को, दोपहर को, तीनों पहर मैं दोहाई दूंगा और कराहता रहूंगा। और वह मेरा शब्द सुन लेगा।

निश्चित रूप से पूरी दुनिया में सबसे अच्छे पुरुष और महिला वे हैं, जो प्रार्थना करते हैं और नियमित प्रार्थना करते हैं, घुटने टेकते हैं, जैसा कि दानिय्येल ने किया था। (दानिय्येल 6:10) निश्चित रूप से सांसारिक मामलों में से निकले गए क्षण इस प्रकार से बेहतर बिताए जाते हैं । और ऐसे बिताये गए क्षण उस अनुपात से आराधना करने वाले और उससे सम्बंधित सभी मामलों के लिए ज्यादा आशीषें लाते हैं। निश्चित रूप से, इस समर्पित जीवन को प्रार्थना की अवहेलना करके जीना असंभव है ...(हम प्रार्थना की उपेक्षा या अवहेलना नहीं कर सकते हैं।) एक मसीही के लिए ये विशेष अधिकार और भी बढ़ जाता है इस अहसास के द्वारा कि, "पिता के पास हमारा एक सहायक या वकील है, अर्थात धर्मी यीशु मसीह"। (1 यूहन्ना 2:1) उनके सदैव उपस्थित नाम के द्वारा हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांधकर जा सकते हैं कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे। (इब्रानियों 4:16) । Z'11-348` R4875:4 (Hymn 97) आमीन

रात का गीत (4 नवम्बर)

मत्ती 25:6 ... देखो, दूल्हा आ गया है! ... ।

प्रभु यीशु के दुबारा आ जाने के विषय की सच्चाई की यह घोषणा, सचमुच में एक परीक्षा है, जो ये जाँचता है कि प्रभु यीशु की कुंवारियाँ होने का दावा करने वालों में से कौन सी वे कुँवारियाँ हैं जिनकी कुप्पियों में तेल है मतलब किनमें नम्रता, धीरज, प्रेम, भक्ति की सही आत्मा है और अपने दूल्हे की बातों में रूचि है। केवल और केवल वे ही दूल्हे के द्वारा चाही जाएँगी या इन्हीं कुंवारियों को प्रवेश करने की अनुमति दी जाएगी। इसे देखते हुए, ये स्पष्ट है कि अभी के समय में हमारा काम न केवल दूल्हे की उपस्थिति का प्रचार करना है, बल्कि जिनकी कुप्पियों में तेल है उनकी मशालों को छांटने में भी उनकी मदद करनी है। यदि तेल खरीदने के लिए अभी बहुत देर नहीं हुई है तो जल्द ही देर हो जाएगी, और इसलिए हमारा विशेष ध्यान उन लोगों के संबंध में **होना चाहिए जिनके पास प्रभु की आत्मा का तेल है, लेकिन वे अभी भी सोई हुई हैं या झपकी ले रही हैं और प्रभु की उपस्थिति को उनके ध्यान में लेने के लिए हमें इसकी घोषणा कोमलता से, धैर्य से, सहनशीलता से करने की जरूरत है। `Z'06-315` R3869:5 (Hymn 230) आमीन**

रात का गीत (5 नवम्बर)

रोमियो 10:10 … उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।

इस वचन का मतलब ये हुआ कि एक गूंगा विश्वासी कभी भी अपनी बुलाहट और चुनाव को पक्का नहीं कर सकता। यहाँ पर जो, स्वाभाविक रूप से गूंगे हैं, हम उनके बारे में बात नहीं कर रहे: पर "मुंह" शब्द को ठीक उसी तरह से समझना है, जैसे कि, हम हृदय के “कानूनों” के बारे में और “हमारी समझ की आँखों” के बारे में बात करते हैं। एक हृदय जो परमेश्वर के अनुग्रह को देखता या सुनता है, और सच में उसे स्वीकार करता है, उसे अवश्य देखी और सुनी बातों के कारण हृदय में इतना उत्साहित हो जाना चाहिए की वो अवश्य ठीक समय में इसके आनंद और शांति और आशा और विश्वास और कृतज्ञता को बाहर प्रगट करने से खुद को रोक न पाये। [गलातियों 6:9 “ठीक समय में] प्रेरितों 4:20 वचन में प्रेरितों ने ये एलान किया है कि, "यह तो हमसे हो नहीं सकता कि जो हमने देखा और सुना है ,वह न कहें"। सभी मसीही लोग, जिन्होंने सत्य की रौशनी पायी है, परमेश्वर के अनुग्रह को उनकी दिव्य योजना में देखा है, ये चखा है की प्रभु कृपालु हैं, इस आश्चर्य को सुना है कि, "बहुत ही

बड़े उद्धार, जिसकी चर्चा पहले पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुनने वालों के द्वारा हमें इसका निश्चय हुआ"- ऐसे लोगों को निश्चय ही चुप नहीं रहना है और न ही वो चुप रह सकते हैं, और न ही अपनी रौशनी के प्रकाश को पैमाने के नीचे रख सकते हैं। यदि वे अपनी रौशनी के प्रकाश को पैमाने के नीचे रखते हैं तो इसका मतलब है कि वे अपनी रौशनी को बुझा रहे हैं, अपनी उन्नति को रोक रहे हैं; और यदि इसी में लगे रहे तो अंततः इसका मतलब उनके लिए दूसरी मृत्यु में नष्ट हो जाना होगा; क्योंकि जो स्पष्ट तौर से इन वचनों को समझने के बाद भी प्रभु और उनके वचनों से लजाते हैं, वे न केवल राज्य के लायक ही नहीं हैं, बल्कि प्रभु भी किसी भी, और सभी परिस्थितियों में ऐसे लोगों से लजायेंगे।`Z'02-72` R2966:5 (Hymn 261) आमीन

रात का गीत (6 नवम्बर)

1 पतरस 1:5 …जिन की रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से, विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिये…. की जाती है।

जीवन के माध्यम से हम लगभग रोज ऐसे स्थानों में और परिस्थितियों में पहुँचते हैं, जिसे यदि हमने गलत रीति से अपनाया तो हमारे परमेश्वर के साथ रिश्ते और मेलजोल के पूरे मार्ग को ये परिस्थितियां पाप और उनके विरोध के मार्ग में बदल सकतीं हैं। किस मसीही ने कभी ये अनुभव नहीं किया है, कि उसके जीवन के कुछ जोखिमों में उसे लगा न हो कि,

दो आवाजें उससे बात कर रही है; एक आवाज किसी भी कीमत पर परमेश्वर के प्रति विनम्रता और आज्ञाकारिता के पक्ष में; और दूसरी आवाज घमण्ड से उसकाये हुए स्वंय की इच्छा को करने के लिए हठ करते हुए? यदि हम बहुत सी उन्नति किये हुये मसीहियों में से हैं, जिन्होंने कई विजय प्राप्त की है और ऐसी स्थिति में आ गए हैं, जहाँ उनके लिए ऐसे घेराव (चारों और से शत्रुओं के हमले) में पड़ना दुर्लभ है, तब भी हमें सावधान रहना है और ये याद रखना है कि हमारा विरोधी बहुत कुटिल है, कि हमारे पास नए मन का खजाना एक मिट्टी के बर्तन में है (2 कुरिन्थियों 4:7)। और की हमारे शरीर मैं कोई भी परिपूर्णता वास नहीं करती है। इन बातों को फिर से याद करके, हममें अवश्य बहुत विनम्रता आ जानी चाहिए, और परमेश्वर के करीब सटने की ओर ले जाना चाहिए और किसी भी ऐसे व्यवहार के रवैये और यहाँ तक कि, विचारों से, जो किसी भी मात्रा में दिव्य इच्छा का विरोध करते हुए नजर आये, हमें इनसे भय और घृणा होनी चाहिए। आमीन। `Z'08-265` R4233:6 (Hymn 183)

रात का गीत (7 नवम्बर)

मत्ती 10:21 भाई, भाई को … घात के लिये सौंपेंगे … ।

आह, यदि ऐसा हो कि परमेश्वर का प्रेम किसी भी समय हमें बाध्य करने में इतना असफल हो जाये कि न केवल हम उनके प्रेम और भाईचारे से

मुड़ जाएँ, बल्कि तलवार का उपयोग भाई को घायल करके घात करने के लिए करें। आनेवाले दिनों में आत्मिक इस्राएल के साथ जो होनेवाला है, उसकी तस्वीर को हमें अपने मनों में छाप देना चाहिए और हमारे दिलों में मुहर लगा देनी चाहिए, जब भाई-भाई के विरुद्ध हो जाएंगे, जिसकी अनुमति प्रभु अपने राज्य की स्थापना के ठीक पहले देंगे। आइए हम ये संकल्प लें कि दूसरे चाहे जैसे भी लड़ें, हमारे युद्ध के हथियार शारीरिक नहीं होंगे और हमारा युद्ध उनके विरुद्ध नहीं होगा जो कि वाचा के द्वारा परमेश्वर के हैं, बल्कि हमारा युद्ध महाविरोधी शैतान के खिलाफ ही होगा। शारीरिक हथियार केवल बन्दूक और तलवार नहीं हैं, बल्कि ज्यादा हानिकारक और प्राणनाशक हथियार हमारी जीभ है, जब वह निंदा करने और घाँव पहुँचाने के लिए उपयोग में लायी जाती है। परमेश्वर ही यह मदद करें कि, हमारी जीभ, जिनके द्वारा हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं, किसी मनुष्य को-- विशेष रूप से किसी भी विश्वास के घराने के सदस्य को चोट पहुँचाने का कार्य न करें। `Z'08-267` R4235:5 (Hymn 333) आमीन

रात का गीत (8 नवम्बर)

1 कुरिन्थियों 1:26 हे भाइयो, अपने बुलाए जाने को तो सोचो, कि न शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन बुलाए गए।

कितना अज़ीब है! ये कुछ ऐसा है जैसे की प्रभु आत्मधर्मी या पाखण्डी और घमण्डी के पास से होकर जाते हुए यह घोषणा कर रहे हों कि, केवल वही जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जायेगा और जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा (मत्ती 23:12) । तब सच्चाई यह है कि परमेश्वर किसी को भी स्वीकार नहीं करेंगे, बल्कि केवल विनम्र खातों को, क्योंकि सच यह है कि जिन्होंने भी विनम्रता से ये सन्देश पाया है वे मुख्यतः छोटे और अप्रतिष्ठित हैं। वे केवल विनम्र मन वाले हैं, जिन्हें मसीह की पाठशाला में पढ़ाया जाता है और वे लोग दूसरे अप्रतिष्ठित लोगों को स्वीकार कर पाते हैं, जिनका स्तर परमेश्वर के स्तर के अनुसार मेल खाता है। अप्रतिष्ठित लोगों से प्रेम करना यह दर्शाता है कि हम अवश्य उन्हें दिव्य दृष्टिकोण से देखें और उनसे वैसा ही प्रेम रखें, जैसा प्रेम परमेश्वर ने उनसे किया है - वे अप्रतिष्ठित और कमजोर हैं इसलिए नहीं हैं, बल्कि इसके बावजूद भी उनके ह्रदय की तमन्ना परमेश्वर और उनकी धार्मिकता की ओर मुड़ी है, इसके कारण हमें उनसे प्रेम करना है। जैसे जैसे हम उन्हें प्रेम करने और उनकी सराहना करने के लिए आगे आते हैं, जो सिद्धांतों के लिए खड़े रहते हैं और प्रयत्न करते हैं, हम परमेश्वर का पक्ष लेते जाते हैं और सारी परिस्थिति को परमेश्वर के दिव्य दृष्टिकोण से देखने लगते हैं। हमें जो, कमजोर हैं, उन पर दया आती है और हम उनकी सहायता के लिये जो भी कर पाते हैं, करते हैं, खास कर यदि वे लोग ऐसे लोग हैं जो कि धार्मिकता से प्रेम और बुराई से बैर रखते हैं और अपने आदर्शों से तालमेल रखने का पूरा प्रयत्न कर रहे हैं। `Z'08-326` R4269:4 (Hymn 194) आमीन

रात का गीत (9 नवम्बर)

इब्रानियों 10:25 और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना ने छोड़ें ... ।

जैसे दाऊद तम्बू के निकट, परमेश्वर के करीब रहने की चाहत रखता था वैसे ही, हम जो परमेश्वर के प्रिय पुत्र की देह के सदस्य हैं, हमें खुद को, परमेश्वर के निकट घनिष्टता से चलता हुआ पाये जाने की इच्छा के लिये, उनके इंतज़ाम के निमित्त बनाए गए 'प्रायश्चित्त के ढकने' के निकट आने के लिये, मसीह यीशु के नजदीक आने के लिए, तरसता हुआ देखना चाहिए । उनकी देह के सदस्यों, कलीसिया के निकट रहने की चाहत और उनसे भाईचारा रखने की चाहत इसका संकेत होगा, क्योंकि अभी तम्बू का पवित्रस्थान जिन वस्तुओं की अवस्था को दर्शाता है, उस अवस्था में और महिमा वाली अवस्था में केवल एक पर्दे का अंतर है। और क्या ऐसा नहीं है कि जो कोई भी, अपने नये स्वभाव के तहत, परमेश्वर के नजदीक और उनसे भाईचारा रखने वालों के नजदीक रहने की इच्छा रखता है, वह परमेश्वर की स्तुति करने के विशेष अधिकार पर ख़ास ध्यान देगा और इसे भाइयों के लिए अपने प्रेम, और परमेश्वर में और उनकी रौशनी में और ज्ञान और प्रेम में अपने भरोसे और विश्वास के द्वारा प्रगट करेगा। `Z'08-311` R4260:5 (Hymn 329) आमीन

रात का गीत (10 नवम्बर)

2 कुरिन्थियों 12:9 और उस ने मुझ से कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है; इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे।

अहा! प्रेरित कहते हैं कि यदि ये कष्ट होने का मतलब ज्यादा दिव्य अनुग्रह है, तो मैं इन कष्टों को रखकर संतुष्ट हूँ और इन कष्टों से दूर होकर दुखी हो जाऊंगा। इसलिए आइये प्रिय मित्रों, हम भी अपनी परीक्षाओं, ताड़नाओं, परेशानियों को इसी प्रकार हमारी भलाई के लिये दिव्य मंजूरी की नजर से देखें। आइये हम निश्चिन्त रहें कि जिसने हमें प्रेम के बंधनों में स्वीकार किया है और अपनी पवित्र आत्मा से उत्पन्न करके हमें अपना पुत्र बनाया है, वो हमारी सर्वोत्तम रुचियों से अनजान नहीं है और हमें यूँ ही दुःख उठाने न देगा और न ही हमें परीक्षाओं और लालसाओं में डालेगा सिवाय इसके कि वो उन सभी अनुभवों को पुरे तालमेल के साथ हमारे सर्वोत्तम कल्याण के लिये बदल देंगे। Z'09-86` R4356:6 (Hymn 43) आमीन।

रात का गीत (11 नवम्बर)

प्रेरितों के काम 11:21 और प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे।

यहाँ पर शब्द 'हाथ' इशारे में 'ताकत' और 'दिशा' बताता है। यहाँ पर हमें सभी सफल मसीहियों के कार्यों का सच्चा रहस्य मालूम चलता है, जिनको की दिव्य मंजूरी मिलती है। यदि हम कहें तो प्रत्येक मसीही परमेश्वर के हाथ की ऊँगली है। यदि हम परमेश्वर का माध्यम और राजदूत के रूप में उपयोग किये जाएँ तो हमें उन्हीं के मार्गदर्शन और प्रयोजन को खोजने की चेष्टा निरंतर करनी चाहिये। हमें पवित्र शास्त्र बाईबल के माध्यम से परमेश्वर की आवाज सुननी है, और हमें सत्य की आत्मा के द्वारा स्फूर्तिदायक ताकत को महसूस करना है। परमेश्वर के कार्य को करने के लिये, हमें हमारी सफलता के लिये किये गये प्रयत्नों को बहुत बड़ी गिनती के द्वारा नहीं नापना है। हमें अपनी मेहनत पर फल की उम्मीद रखनी है। यदि संयोग से, हमारी अज्ञानता की वजह से परमेश्वर का संदेशा प्रस्तुत करते समय हम 'परमेश्वर के राजदूत' होने के प्रभाव को खो देते हैं, तो हमें परमेश्वर से और ज्यादा ज्ञान मांगना चाहिए, और दूसरे अवसरों की तलाश में परमेश्वर की ओर देखना चाहिये ताकि और भी सेवा करने के नये दरवाजे खुल जाएँ। इन नए अवसरों में हमें अपने अनुभवों से मिली शिक्षा को अभ्यास में लाना चाहिए। `Z'09-90` R4357:2 (Hymn 275) आमीन

रात का गीत (12 नवम्बर)

निर्गमन 3:12 उस ने कहा, निश्चय मैं तेरे संग रहूंगा; ...।

जब हम उचित रीति से परमेश्वर के कार्य का कोई भी हिस्सा करने का प्रयत्न करते हैं तो ये वचन हमारे लिए प्रेरणा का श्रोत हर समय रहता है (निश्चित मैं तेरे संग रहूंगा) । और हमें परमेश्वर का ख्याल इस वचन के द्वारा आता रहता है। यदि परमेश्वर हमारी और है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है? जैसे मूसा के साथ हुआ, वैसे ही हमारी सेवा में बहुत सी कठिनाइयाँ, क्लेश, परेशानियाँ और निराशायें आएँगी, क्योंकि हमारी नयी सृष्टि इस शरीर में है जो कि कमजोरियों और कमियों के कारण अक्सर हमें परेशानियों और निराशाओं में डाल देता है। ऐसे समयों में हमें अपनी आत्मिक समझ की आँखों को खोलकर जिस परमेश्वर को हम पूजते हैं उनकी और मुड़ना चाहिए, जिनके की हम राजदूत हैं, प्रतिनिधि हैं, और उनके इस वादे को याद करना चाहिए कि "निश्चय मैं तेरे संग रहूंगा"। इसका मतलब संभावित विजय है, और ये विजय परमेश्वर की मदद से उनकी महिमा के लिए सम्भवतः ऐसे तरीकों से मिलेगी, जिन्हें हम नहीं जानते, नहीं समझते, और जो आखिरी में हमारे लाभ के लिए ही हो। `Z'01-361` R2910:1 (Hymn 126) आमीन।

रात का गीत (13 नवम्बर)

आमोस 4:12 … अपने परमेश्वर के सामने आने के लिये तैयार हो जा॥

परमेश्वर के सामने आने की तैयारी करने का सही तरीका ये नहीं है कि जब हम मृत्यु, बीमारी या दुर्घटना के करीब हों तो पवित्र संत बनने की कोशिश करें और हमारे चरित्र के बारे में परमेश्वर का फैसला सुनें। जिस पल हम मसीह पर विश्वास करते हैं, अपने पापों से मुड़ते हैं और क्षमा खोजते हैं और परमेश्वर की खास आशीषों के लिये योग्य बन जाते हैं, उसी समय से हमसे विनती की जाती है कि हम अपने शरीरों की जीवित बलि दें और भाईचारा की पवित्र आत्मा पाएं और परमेश्वर हमें गोद ले लें। इस तरह से हमारा दाखिला प्रभु यीशु मसीह की पाठशाला में हो जाता है, जहाँ पर हमें परमेश्वर के पुत्र की तरह सिखाया जाता है और प्रभु यीशु के राज्य में अपने उद्धारकर्ता के महिमा वाले काम में उनका साथ देने के लिए हमें तैयार किया जाता है। जैसे जैसे हम अनुग्रह और ज्ञान में आगे बढ़ते हैं, हम दिव्य समर्थन जो हमें मिलता रहता है उसकी प्रशंशा में भी आगे बढ़ते जाते हैं। और ऐसे ही लोगों के हृदय कभी भी परमेश्वर से मिलने के लिये तैयार रहते हैं। बल्कि वास्तव में तो उनकी परमेश्वर से मुलाकात शुरू हो गयी है, और यदि कुछ भी ऐसा होता है, जो इस मुलाकात में बाधा बनता है तो सचमुच वो एक दुर्घटना ही होगी। `Z'08-266` R4234:5 (Hymn 162) आमीन

रात का गीत (14 नवम्बर)

यूहन्ना 20:29 … धन्य वे हैं जिन्हों ने बिना देखे विश्वास किया॥

अभी अंधकार है, धर्म के सूर्य उदय होने और चंगाई की किरणों के आने के ठीक पहले का समय है। सभी संदेहों, डरों और बाधाओं को तित्तर बित्तर करने के लिए, परमेश्वर ने विश्वास के ऊपर ज्यादा मूल्य रखा है (ज्यादा महत्व दिया है) और केवल वे ही जो विश्वास रखेंगे और विश्वास का अभ्यास करेंगे, उन्हीं के लिये कुछ खास इनाम, अधिकार, अवसर और आशीषें हैं। सुसमाचार युग की छोटी झुण्ड के लिये ये लिखा है कि "हम रूप पर नहीं, विश्वास पर चलते हैं"। हम जो अदृश्य है ,उन्हें देखकर दृढ़ रहते हैं; हम मुकुट और सिंहासन के लिये दौड़ते हैं जिन्हें केवल विश्वास की आँखों के द्वारा ही देखा जा सकता है; हम स्वर्ग से आनेवाली शब्द की आज्ञापालन करते हैं; लेकिन वे शब्द धीमी आवाज़ में केवल उन्हीं को सुनाई देते हैं जो कि विश्वास का इस्तेमाल करते हैं, और विश्वास ही के द्वारा हम इस धीमी आवाज को सुन सकते हैं, उसकी तारीफ कर सकते हैं और उसे समझ सकते हैं। थोड़ी देर में ये आवाज पूरी पृथ्वी को हिला देगी और परमेश्वर के ज्ञान से पूरी दुनिया को भर देगी। उस समय (हजार साल के राज्य) की आज्ञाकारिता भी ठीक होगी और आशीषें लाएगी, परन्तु अभी (सुसमाचार के युग) का आज्ञापालन ज्यादा बड़ी आशीषें लायेगा। यहाँ तक का आज्ञापालन की प्रभु यीशु के पद चिन्हों पर चलते चलते जो की हमारे आदर्श हैं सभी सांसारिक रुचियों का बलिदान कर दिया जाये। ये

ऐसी आशीषें हैं जो न केवल इस जिंदगी के लिये है, बल्कि आने वाले जीवन के लिये भी हैं जिसमे हमें महिमा, आदर और अनन्त जीवन की आशीषें मिलनी है। `Z'01-141` R2804:5 (Hymn 46) आमीन

रात का गीत (15 नवम्बर)

इब्रानियों 12:13 और अपने पांवों के लिये सीधे मार्ग बनाओ, कि लंगड़ा भटक न जाए, पर भला चंगा हो जाए॥

यहाँ पर प्रेरित के कहने का तात्पर्य क्या है? यहाँ पर वे साधारण भाषा में अपने पावों के लिए मार्ग को खोदकर सीधा करने को नहीं कह रहें हैं, और न ही यहाँ पावों का मतलब हमारे शारीरिक पैर हैं। इस बात पर तो सभी सहमत होंगे। स्पष्ट रूप से, यहाँ पर प्रेरित यह शिक्षा दे रहें हैं कि परमेश्वर की प्रत्येक भेड़ के अन्दर कम या अधिक मात्रा में सांसारिक त्रुटियाँ हैं (अपरिपूर्णता), इसलिए इस लंगड़ेपन (हमारी त्रुटियाँ) की वजह से हमारे लिए प्रभु यीशु मसीह के मार्ग में उनके पदचिन्हों के पीछे चलने में और नियमित उन्नति करने में कठिनाई होती है। यहाँ प्रेरित हमसे विनती कर रहें हैं कि हम अपनी कमजोरियों को पहचाने, (शारीरिक और मानसिक दोनों कमजोरियों को) और उसी के अनुसार हमारे जीवन को ढ़ालने का प्रयत्न करें, ताकि हम सभी परेशानिओं पर जय पा सकें, जो इस मार्ग में हैं और शैतान के घेराव से बच सके। जब हम बिना मतलब के अपने प्रयत्नों के द्वारा अपनी कमजोरियों को खुद पर हावी नहीं होने

देते हैं तब हम अपने पावों के लिए मार्ग को सीधा करते हैं, और ऐसा करने के लिए हम केवल यही प्रार्थना कर सकते हैं कि 'हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा', और पूरी तरह से हर प्रलोभन से खुद को बचाने का पूरा प्रयत्न करना है। हमारे दृढ निश्चय और इच्छाओं पर काबू पाकर, मानसिक दृढ़ता या मन्नत लेकर, परमेश्वर से पवित्र वादा करके हम सीधे मार्ग पर चल सकते हैं। इसीलिए हमें परमेश्वर से सीधे मार्ग पर चलने की मन्नत लेकर उसपर दृढ रहना है, और विश्वासी बनकर उसे निभाना है, तभी हमारी दौड़ को दिव्य मंजूरी मिलेगी। `Z'09-75`R4348:2 आमीन

रात का गीत (16 नवम्बर)

प्रकाशितवाक्य 15:3 और वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत, और मेम्ने का गीत गा गाकर कहते थे ...॥

मूसा का गीत पुराने नियम की किताबे हैं और मेम्ने का गीत सुसमाचार की किताबे हैं जो की नए नियम में है। हम जिन्हें दुल्हन बनने की, और मसीह के साथ साँझा--वारिस बनने की आशा है, हमसे ये उम्मीद की जाती है की हम परमेश्वर के दास मूसा का गीत और मेम्ने का गीत गाकर लोगों को सुसमाचार सुनाएँ। क्योंकि प्रकाशितवाक्य 5:12 वचन के अनुसार “वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और धन्यवाद के योग्य है”। ये नया गीत बड़े आनन्द का सुसमाचार है जिसे सब लोगों को सुनाना है, और हमें ये

जाँचना है कि हमने इस गीत को किस हद तक सीखा है और कितना गा सकते हैं ? हम निश्चय पायेंगें कि यह जीवन भर सीखते रहने वाला पाठ है। हम इससे प्रभु में आनन्दित होते हैं कि जिनके सुनने के कान हैं, उन तक हमारे परमेश्वर की गवाही देने का विशेष अधिकार हमारे पास है, फिर चाहे इस गवाही को देने में हमें विरोध, अपमान या निन्दा ही क्यों न सहनी पड़े। हमारे धीरज और विश्वास को लगातार बनाये रखना है, और हमें राज्य को उसके पूरी महिमा वाली सुंदरता और बदलाव में आने का इन्तज़ार करना है, और यह बदलाव हमारे में आएगा, जिससे की हम पूरी निपुणता के साथ दूसरों के संग, ये धन्य आशीषित आनन्द का शुभ समाचार बाट सकेंगें। `Z'08-269` R4236:5 (Hymn 79) आमीन

रात का गीत (17 नवम्बर)

प्रेरितों के काम 9:34 … यीशु मसीह तुझे चंगा करता है; … ॥

यह वचन पतरस ने एनियास नमक लकवे के रोगी, जिसे उन्होंने लुद्दा में पाया था और चंगा किया था, उससे कहा था। इस वचन में एनियास को परमेश्वर का संत नहीं बताया गया है, इसीलिए हम भी ये अनुमान लगाते हैं की वो संत नहीं था, लेकिन ज्यादा से ज्यादा वो संतों का मित्र हो सकता है, और इसीलिए पतरस प्रेरित का ध्यान एनियास पर गया। वह (एनियास) आठ साल से खाट पर असहाय पड़ा था, इसलिए उसकी चंगाई एक चमत्कार थी। इसकी प्रसिद्धि दूर दूर तक हुई और हमें बताया

गया है कि इस चमत्कार ने बहुतों को प्रभु और उनकी कलीसिया की ओर खींचा। इस प्रकार, प्रभु यीशु ने चर्च की स्थापना की और जिसके हृदय सही दशा में थे, चमत्कारों के द्वारा उन्हें आकर्षित किया, जैसे अभी के समय में दूसरे माध्यम या तरीकों से लोगों को सच्चाई में खींचते हैं। ये चमत्कार प्रेरितों के समय तक ही रहे क्योंकि 'चंगाई का वरदान' केवल प्रेरितों के ऊपर हाथ रखकर ही दिया गया था और बारह प्रेरितों के बाद इस वरदान का वारिस कोई और नहीं हुआ - स्वर्गीय यरूशलेम की केवल बारह नींव हैं, और उनमे केवल बारह प्रेरितों के नाम लिखे हैं, और किसी के भी नहीं। `Z'02-105` R2987:5 (Hymn 264)आमीन

रात का गीत (18 नवम्बर)

उत्पत्ति 12:2 … और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा।

अब्राहम को दिया गया परमेश्वर का ये वादा हमारे हृदयों में पूरा होना शुरू हो गया है, लेकिन यहीं पर ये वादा, पूरी तरह से पूरा नहीं होता है। थोड़ी देर में पवित्र साम्राज्य (मसीह का शरीर, कलीसिया) परमेश्वर के राज्य में दिव्य आशीषों और शक्ति से जब भर जायेगा तब ये वादा और भी ज्यादा बड़े तौर पर पूरा होगा। हम ये भी महसूस करते हैं की यद्यपि अभी के समय में हम अपना प्रकाश जो हमें परमेश्वर की आत्मा से मिला है दूसरों के सामने फैला पा रहें हैं, और इस प्रकाश को परमेश्वर ने अपने

अनुग्रह से हमारे ह्रदय में चमकाया है और उसे दूसरों के सामने भी चमकाने की आशीष दी है, लेकिन फिर भी हमारा सभी जातियों को आशीष देने का समय अभी भी भविष्य में है। वो समय उस युग के लिए है जिसकी हम प्रार्थना करते हैं की 'तेरा राज्य आये... और तेरी इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो'। हम ये तर्क भी देते हैं कि निश्चय अभी के समय में हमारे नाम की बुराई होती है, और जैसे हमारे सिर - मसीह पर दोष लगाया गया था, हम पर भी वही बदनामियाँ आएंगी, क्योंकि हम उसी के शरीर के सदस्य हैं, लेकिन वह समय बहुत ही जल्द आ रहा है जब मसीह का नाम पूरी पृथ्वी पर महान होगा और क्योंकि यह नाम हमारे दूल्हे का है, यही नाम हमारा भी होगा, उनकी दुल्हन और साँझा वारिस के रूप में। हम उस समय के आनंद की ओर देखते हैं, जब पवित्र साम्राज्य जिसे अभी विचित्र जाना जाता है, और जिसे सब गलत समझते हैं, उसी पवित्र साम्राज्य के लोगों के द्वारा, दीनों, अंधों, शैतान से धोखा खाई दुनिया और नाम के ईसाईयों को आशीष मिलेगी, क्योंकि सभी बुराइयाँ जो मसीह और उसकी देह के साथ के की गयी थी, उसके बदले में, उन लोगों की भलाई की जाएगी - उन्हें सिखाया जायेगा, उठाया जायेगा और दिव्य समर्थन की ओर मोड़ा जायेगा। `Z'01-231` R2847:2 आमीन

रात का गीत (19 नवम्बर)

प्रकाशितवाक्य 21:7 जो जय पाए, वही इन वस्तुओं का वारिस होगा; और मैं उसका परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा।

इस वचन में जिन्हें सम्बोधित किया गया है वे छोटी झुण्ड के नहीं हैं, जिन्हें सुसमाचार के युग में चुना जा रहा है, बल्कि मत्ती 25 वें अध्याय के भेड़ की झुण्ड के हैं जो कि हज़ार साल के राज्य में मानवजाति का वह हिस्सा है जो कि प्रभु यीशु की आज्ञाओं को मानती हैं। इन्हीं लोगों के लिए, हजार साल के अंत में, परमपिता की योजना के अनुसार, प्रभु यीशु कहते हैं 'हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है' (मत्ती 25:34)। इन लोगों को उस राज्य का वारिस होने के लिए नहीं बुलाया गया है जिसका बुलावा हमें है - स्वर्गीय राज्य। लेकिन वे पृथ्वी के वारिस होंगे, जो की प्रभु यीशु के लहू से खरीदी गयी है, और सब लोग फिर से अपने पूर्वज आदम की अच्छी अवस्था में आ जायेंगे जिसे आदम ने अपने और सभी बच्चों के लिए आज्ञापालन नहीं करके खो दिया था, परन्तु फिर प्रभु यीशु ने अपने बहुमूल्य लहू से छुड़ाया, और हजार साल के अंत में फिर से सुधारकर मानवजाति को लौटा देंगे। आदम के वंश उस समय अनुग्रह से भरे हुए प्रभु यीशु के इस समर्थन को स्वीकार करेंगे और उन्हीं के द्वारा मन फेर कर नया जीवन पाएँगे, और इस प्रकार पूरी मानवजाति

प्रभु यीशु का पुत्र बन जाएगी और प्रभु यीशु उनके पिता परमेश्वर बन जायेंगे। `Z'01-201` R2833:5 (Hymn 214) आमीन

रात का गीत (20 नवम्बर)

भजन संहिता 27:14 यहोवा की बाट जोहता रह ...!

हम में से कुछ लोगों ने अपने अनुभवों से यह सीखा होगा कि हर किसी भी मामले में परमेश्वर के सामने जाना हानिकारक हो सकता है। हमलोग खुद को रास्ता दिखाने के लिये बुद्धिमान नहीं हैं। एक कवि ने कहा है - जो वस्तुएं ज्यादा उलझन वाली होती है उन्हें हम छूने में भी डरते हैं। यदि हम अपनी दशा की नाजुकता को समझ सकें तो वो हमें और भी ज्यादा नम्र और सतर्क बनाएगी। हम केवल अपनी रुचियों और अनंत महिमा को ही दाँव पर नहीं लगाते, बल्कि दूसरे संगी सदस्यों (मसीह के शरीर के अंगों) की रुचियों को भी दाँव पर लगते हैं। उतावली में कहा हुआ शब्द, मूर्खतापूर्वक काम, दूसरों के बारे में सोचे बगैर किया गया काम - ये सब हमारे हृदय पर प्रतिकूल (गलत) प्रभाव छोड़ेंगे। और यदि किसी तरह हम परमेश्वर के वादों को हासिल कर भी लें तो वह क्लेशों के द्वारा होगा न कि, उन रास्तों पर चलने की वजह से जिसपर परमेश्वर हमें चलाना चाहते थे। `Z'08-267` R4235:2 (Hymn 313) आमीन

रात का गीत (21 नवम्बर)

इफिसियों 5:14 … हे सोने वाले जाग और मुर्दों में से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी॥

जब हमारी भरोसा करनेवाली, बदली हुई, समर्पण की हुई, उत्पन्न हुई, सो रही नई सृष्टि को जिलाया जाता है, जिसकी समझ की आँखें और कान खुल गए हैं ताकि वो दुनिया को उसकी सच्ची अवस्था में देख सके, और खुद को मसीह में नई सृष्टि के रूप में महसूस कर सके --उसका अगला कर्त्तव्य होता है कि वो उठे या जाग जाए। <u>हमारी नई सृष्टि का मुर्दों में से जी उठना ये दर्शाता है कि हमारे नाशवान शरीर को नया मन, नई इच्छा, नई दिशा दिखा रहा है और नियंत्रण कर रहा है।</u> इसका अर्थ है, सारा प्रयत्न, नई सृष्टि को सारी ऊर्जा देने में लगा देना है। जब कोई जी उठता है (जागता है) तो वापस सोने में या लेट जाने में कोई प्रयास नहीं लगता लेकिन उठकर खड़ा होने के लिए हमारी सभी मांसपेशियों को कसरत करनी पड़ती है। जी उठना या जागकर खड़ा होना, तुरन्त होने वाली वस्तु नहीं है बल्कि एक प्रक्रिया है जिसमे हमें एक--के बाद एक हरकत करनी पड़ती है, जब तक कि हम पूरी तरह से खड़े न हों जाएँ। उसी प्रकार नई सृष्टि को अपनी पाप में मरी हुई अवस्था और धार्मिकता के, सच्चाई के और शुद्धता के कानूनों का उलंघन करने की मरी हुई अवस्था में से जागकर जी उठने में समय लगता है, इसके लिए हमें हर संभव प्रयत्न करना पड़ता है, और ये समय लगने वाला काम है। निश्चय, सभी अनुभवी

मसीहियों को जिन्होंने प्रेरित के इस वचन की आज्ञा को मानकर मुर्दों में से जी उठने का प्रयत्न किया होगा, सभी ने पाया होगा की इसमें सम्पूर्ण उत्साह के साथ लगातार प्रयत्न दिनों, महीनों या सालों तक करते रहना पड़ता है ताकि अपनी शरीर की गिरी हुई अवस्था से जो की मानवजाति की दुनिया में आमतौर पर पायी जाती है, ऊपर उठ सकें और श्रेष्ठ बन सके। वे यह भी पाते हैं कि यद्यपि पूरी तरह से जाग उठने के बाद भी, यदि वे जानबूझ कर पाप का अभ्यास न करे और न ही किसी भी रूप में या अंश में पाप का पालन करे, तो भी उन्हें सचेत रहना पड़ता है, नहीं तो वे अपने ही शरीर की कमजोरियों में फँस जायेंगे, या फिर इस दुनिया के लालच में फँस जायेंगे, या फिर शैतान की लालसाओं में फँस जायेंगे, और फिर से पाप और मृत्यु जिससे परमेश्वर के अनुग्रह ने जिला दिया था, उन्हीं में से कुछ से ठोकर खाएँगे। आमीन `Z. '02-133` R3001:5

रात का गीत (22 नवम्बर)

इफिसियों 5:20 और सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो ।

हम जो की स्वर्ग के निवासी हैं, हमें किसी राष्ट्रीय धन्यवाद के दिन की जरूरत नहीं है, क्योंकि हमारे लिए प्रतिदिन सभी वस्तुओं के लिए धन्यवाद देने का दिन होना चाहिए - हमारे धार्मिक अधिकारी मसीह, हमारे राजा

यीशु की देखरेख में हमारे पवित्र साम्राज्य की समृद्धि के लिए; पवित्र साम्राज्य की शान्ति और आनंद के लिए; पवित्र साम्राज्य के आत्मिक ज्ञान में बढ़ोतरी के लिए और सभी विशेष अधिकारों के लिए; सभी आशीषों के लिए; इसके परिपूर्ण व्यवस्था, और सभी दिशाओं और कर्मों को बनाने के लिए; जरूरत के अनुसार आवश्यक अनुशाशन के लिए, जिसके द्वारा भविष्य में इसकी महिमा के द्वारा उल्लास होगा। दुनियां के लोगों को और कम ज्ञान वाले ईसाइयों को निश्छल ह्रदय से अभी के जीवन की साधारण आशीषों जो धर्मी और अधर्मी दोनों को परमेश्वर देते हैं, उनके लिए धन्यवाद करने दें। जैसे की बारिश, धुप, हवा, भरपूर खेती की उपज, देशों के बीच शान्ति का समय, इत्यादि के लिए। लेकिन हमारा ह्रदय न केवल इन सभी आशीषों में आनन्दित होना चाहिए, बल्कि इनसे ऊपर सभी महिमा वाले आत्मिक आशीषों के लिए भी, जो परमेश्वर ने अपने पुत्रों के लिए खास तौर पर रखा है, हमेशा इन सबका हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमपिता का धन्यवाद करना चाहिए। `Z'93-12` R1490:1 (Hymn 324) आमीन।

रात का गीत (23 नवम्बर)

भजन संहिता 110:7 वह मार्ग में चलता हुआ नदी का जल पीएगा इस कारण वह सिर को ऊंचा करेगा ।

हम ये अनुभव करते हैं कि जब हमारे यशश्वी प्रभु यीशु के लिए स्वर्गीय राज्यसभा से मिले अनुभवों से होकर जाना अनिवार्य था और जो ताड़नाएँ मिली उनके द्वारा ज्ञान को पाना था और सहनशीलता और दुखों को सहते हुए परमेश्वर पर अपना भरोसा दिखाना था, तब उनके शरीर के सभी सदस्यों के लिए भी उसी तरह मार्ग में मिले सभी अनुभवों से होकर जाना अनिवार्य है, तभी वे हमारे प्रभु के साथ उनके राज्य की आशीषों को बाटने की आशा; और महिमा, आदर, अमरता और दिव्य स्वाभाव पाने की आशा रख सकते हैं। इस वचन में इन अनुभवों की तुलना बहते हुए जल की धारा से की गयी है जिसका पानी हमें मार्ग में चलते हुए पीते रहना है। हमारे प्रिय स्वामी/गुरु ने अतीत में इस नदी का जल पिया था, लेकिन पवित्रशास्त्र में उनके सभी अनुभवों का वर्णन हमारे सिखने और प्रोत्साहन के लिए लिखा हुआ है। अब हमारा समय है ताकि हम अनुभवों की बहती हुई जल धारा में से पियें। और वे सभी जरूरी पाठों को सीखे जो हमें उनके राज्य के लिए तैयार करते हैं। केवल यह काफी नहीं की हम अनुभवों को चखें, थोड़ा सा आज्ञापालन सिख लें, थोड़ी सी परीक्षाओं को धीरज से सह लें, कुछ अवसरों पर दुःख के द्वारा आज्ञापालन का पाठ सिख लें, बल्कि हमें लगातार कड़वे अनुभवों की नदी से पानी पीते जाना है, तब तक जब तक की हम प्रसन्नता से ये न कह दे की पिता, मेरी नहीं पर आपकी इच्छा पूरी हो! यदि हम रास्ते में मिल रही जल की छोटी धारा में से पीते नहीं रहेंगे तो हमारे पीछे आने वाली महिमा को भी नहीं बाँट सकेंगे। `Z'02-13` R2936:1 (Hymn 222) आमीन।

रात का गीत (24 नवम्बर)

यशायाह 28:13 इसलिये यहोवा का वचन उनके पास आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम है।

एक मसीही का अनुभव निरंतर पढ़ाई करने वाला है। हम रोज हमारे खुद के बारे में ज्यादा से ज्यादा सिख रहे हैं और परमेश्वर के ज्ञान और न्याय को सिख रहे हैं, समझ रहे हैं। दिन-प्रतिदिन, जैसे जैसे हम ये पाठ सीख रहे हैं, हम हमारे अंदर की कमियों को जान पाते हैं और उन्हें सुधारते रहते हैं। इस तरह से जब हम खुद में कमियाँ पाते हैं तो हमें दूसरों में परिपूर्णता की आशा नहीं करनी चाहिए। हमें उनके अंदर इस बात की प्रशंशा करनी चाहिए कि वे लोग अपना पूरा प्रयत्न कर रहे हैं, एक उच्चतम आदर्श और उदहारण स्थापित करने के लिए जिसकी जरूरत मसीह के शरीर के अंग बनने के लिए और उनमें एकता होने के लिए है। `Z'12-337` R5124:3 (Hymn 198) आमीन

रात का गीत (25 नवम्बर)

व्यवस्थाविवरण 32:11 जैसे उकाब अपने घोंसले को हिला हिलाकर अपने बच्चों के ऊपर ऊपर मंडराता है।

इसलिए क्यों हमें कभी - कभी परमेश्वर की मंजूरी से आई परीक्षाएँ, कष्ट इत्यादि बाहर से हमारे सबसे बहुमूल्य रुचि को नष्ट कर देने वाले लगते हैं? और क्यों वे परमेश्वर के लोगों को अपनी अशांति और झनकार से चकित कर देते हैं? फिर भी, दिव्य देखभाल के अंदर, हमारे घोंसले को सदमा पहुंचा करके और अपने लोगों के ऊपर जिम्मेदारियाँ डालने के बावजूद भी यह सब हमारे लिए लाभदायक बनाया जा सकता है, इसके द्वारा हमारे को पक्का या ढृढ़ या मजबूत किया जा सकता है और हमारी मदद की जा सकती है। इसके बाद एक विश्राम का समय आता है और हमें आत्मिक उन्नति का अवसर मिलता है, आराम मिलता है, अनुग्रह और ज्ञान में उन्नति मिलती है। वे ही लोग खुश हैं, धन्य हैं जो अपने घोंसले के सदमे में होने के समय में, सही तरीके से परमेश्वर के सभी ईश्वरीय देनों का अभ्यास करते हैं और परमेश्वर से सिखाए हुए होते हैं और परमेश्वर के सेवा कार्यों के लिए - धार्मिकता, सच्चाई और प्रेम की सेवा के लिए ज्यादा फुर्तीले बनाए जाते हैं। `Z'09-55` R4335:2 (Hymn 307) आमीन

रात का गीत (26 नवम्बर)

प्रेरितों 9:16 और मैं उसे बताऊंगा, कि मेरे नाम के लिये उसे कैसा कैसा दुख उठाना पड़ेगा।

क्या हमारे परमेश्वर की सेवा कार्यों को छोड़कर कोई और ऐसा सेवा कार्य है जिसमें यह शर्त रखी गयी हो की - हमें दुःख उठाना पड़ेगा? निश्चित नहीं है। लेकिन तब भी हमारे परमेश्वर इतने ईमानदार हैं कि उन्होनें प्रभु यीशु के चेलों को सच्चाई छुपाकर किसी गलतफहमी में डाल कर नहीं बुलाया है। हमें मसीह के साथ दुःख उठाने के लिए बुलाया गया है - खुद को बलिदान करने, हमारे सांसारिक रुचियों का बलिदान करने, उनका क्रूस बाँटने, और इन सभी अनुभवों के द्वारा ये साबित करने कि, हम उनकी आत्मा से उत्पन्न हुए हैं, और ये छोटी सी नयी सृष्टि की पवित्र आत्मा हमारे ह्रदय में चारों ओर फ़ैल गयी है और हमारा परमेश्वर के प्रिय पुत्र में गठन कर रही है। इस कारण के लिए हमारी विश्वासयोग्यता हमारे उद्धारकर्ता के साथ उनके राज्य में साँझा वारिस बनने के पुरस्कार को निश्चित कर देती है, इन सभी राज्य के आदर की आशा किसी और शर्तों पर नहीं की जा सकती है। हमारे प्रेरित पौलुस को ये बात समझ में आ गयी थी, और शायद इसलिए उन्होनें ये विचार व्यक्त किया है कि प्रभु यीशु के अनुयायी जितना ज्यादा शरीर में रहते हुए मसीह के दुखों में सहभागी होंगे उसी अनुपात में वे उस महिमा के भी सहभागी होंगे जो थोड़ी देर में मसीह की देह के सदस्यों के लिए प्रगट की जाएगी। इस वचन में, 'मेरे नाम के लिए' का अर्थ बहुत व्यापक / विस्तृत है। (थोड़े में बहुत कुछ शामिल है) इसमें वो सब बातें शामिल हैं जो दिव्य योजना से जुड़ी हैं, जिसका केंद्र प्रभु यीशु, हमारे मसीहा हैं। 'मेरे नाम के लिए' दुःख उठाने का मतलब वो सभी दुःख है -

1. सच्चाई के लिए जो दुःख उठाते हैं क्योंकि सच्चाई महत्वपूर्ण तौर से, 'उस एक नाम' (मसीह) से जुड़ी है।

2. सच्चाई के भाइयों की और से आने वाले दुःख भी इसमें शामिल हैं क्योंकि उन्होंने मसीह के नाम को अपनाया है और उन्हीं के नाम के भीतर वे उनकी देह के सदस्य बन रहे हैं।

3. इसमें हजार साल के राज्य की तैयारी से जुड़े सभी कार्य भी शामिल हैं क्योंकि प्रभु यीशु ही इसके शिरोमणि हैं, और उनका नाम, उनका आदर उनके राज्य के सभी कार्यों से जुड़ा है।

इसलिए, आओ चाहे जो भी दुःख आएँ, प्रत्यछ या अप्रत्यक्छ, उस 'बहुमूल्य नाम' के प्रति हमारी विश्वासयोग्यता के कारण और विभिन्न रुचियों के कारण जो इस नाम से जुडी है, हम आनंदित हों। Z-09-86; R4356:4 (Hymn 177) आमीन

रात का गीत (27 नवम्बर)

प्रेरितों 20:28 इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस से पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।

सभी जगह अध्यक्षों को खास ध्यान रखना पड़ता है, क्योंकि सभी परिक्षाओं में जो विशिष्ट व्यक्ति होता है उस पर ज्यादा कड़ी परिक्षाएं और घेराव आते हैं। इसलिए प्रेरितों ने जोर देकर कहा है कि (याकूब 3:1) हे मेरे भाइयों, तुम में से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि जानते हो, कि हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे। हम सभी अध्यक्षों से जो कि हृदय के शुद्ध हैं, निस्वार्थ हैं और जिनके अन्दर प्रेम और भली आशीषें सब के लिए है और इसे छोड़कर कुछ भी नहीं है, जो की ज्यादा से ज्यादा आत्मा के फलों और अनुग्रह के फलों में बढ़ते जाते हैं, उन्हें जोर देकर ये कहते हैं की अपने झुण्ड की भी चौकसी करो। याद रखो कि ये झुण्ड प्रभु की है और तुम्हारी जिम्मेवारी प्रभु के लिए और झुण्ड के लिए भी है। याद रखें की उन्हें झुण्ड के हितों का ख्याल रखना है और महान मुख्य चरवाहे को हिसाब देना है। याद रखें की मुख्य सिद्धांत प्रेम है, सभी में, लेकिन हम उपदेशों की अवहेलना नहीं कर सकते, प्रभु के देह के सभी सदस्यों में प्रभु की आत्मा में बढ़ोतरी हो इसके लिए अध्यक्षों को ख़ास ध्यान देना है, ताकि वे ज्योति में पवित्र भाइयों की मीरास के साक्षी बने और दिव्य इच्छा के अनुसार, इन बुरे दिनों में ठोकर न खा जाएँ, बल्कि जो कर सकते हैं, सब प्रयत्न करके मसीह में पूर्ण हो, उनकी देह बने, उनके सदस्य बने और उनके दुखो में सहभागी हो और सांझा वारिस भी बने। `Z'09-73` R4346:5 (Hymn 183) आमीन

रात का गीत (28 नवम्बर)

1 यूहन्ना 1:5 ... परमेश्वर ज्योति है: और उस में कुछ भी अन्धकार नहीं।

बाईबल परमेश्वर को ज्योति कहकर प्रस्तुत करती है। तम्बू में अति पवित्र स्थान के प्रायश्चित के ढकने पर परमेश्वर को अदभुत शकीना रोशनी कहकर प्रस्तुत किया गया है। हमारे प्रभु यीशु मसीह, जो पवित्र आत्मा की रोशनी से भरे थे, फिर उन्हें 'सच्ची ज्योति' कहा गया था। और प्रभु यीशु ने अपने चेलों को 'तुम जगत की ज्योति हो' कहा था.... मत्ती 5:16→ (उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें॥) उसी प्रकार पेंटीकोस्ट के दिन, परमेश्वर की दिव्य शक्ति, उनकी पवित्र आत्मा का चिन्ह आग सी फटती हुई जीभें थी। उसी प्रकार, परमेश्वर की पवित्र आत्मा की तुलना उनके बाईबल के वचनों में दिए से निकल रही लौ की रोशनी से की गई है। हम पढ़ते भी हैं कि (भजन संहिता 119:105→ तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।) पवित्र प्रेम की ज्वाला या आँच, पिता और उनके पुत्र की पवित्र आत्मा, हमारे हृदय को अनुग्रह के वचन और पवित्र आत्मा प्रदान करके उत्तेजित करती है। जिस अनुपात में हम इस ज्वाला को सच्चाई के साथ अपने अन्दर भरते जाते हैं, हम उसी अनुपात में धधकती हुई और जगमगाती हुई रोशनी दुनिया में बनते हैं -- हमारे में प्रभु की आत्मा वास करती है। `Z'09-188` R4419:4 (Hymn 36) आमीन।

रात का गीत (29 नवम्बर)

प्रकाशितवाक्य: 1:18 मैं मर गया था, और अब देख; मैं युगानुयुग जीवता हूं; ।

सुसमाचार के युग से जुड़ा हुआ और कोई भी पाठ हमारे प्रभु यीशु मसीह के पुनरुथान से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है। यीशु की मृत्यु वाकई में हमें उनके प्रेम, और हमारे लिए उनके पिता के प्रेम को दिखाती है। लेकिन दिव्य योजना में, नियमानुसार यीशु की मृत्यु से मनुष्य को उचित लाभ हो, उसके लिए 1) उनका (यीशु का) मरे हुओं में से जी उठना अनिवार्य था, 2) उनका (यीशु का) हमारे उद्धार का कप्तान बनना जरूरी था, और हमारे छुड़ाने वाले उद्धारकर्ता भी बनना जरूरी था। एक मरा हुआ मसीह हमारा बचाने वाला उद्धारकर्ता नहीं हो सकता था, क्योंकि ये कह दिया गया था कि, "(यूहन्ना 14:19 → … इसलिये कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे।" जब हम हजार साल के दिन की पुनरुथान की सुबह में आते हैं जिसमें ये वादा है, कि, उसके द्वारा (पुनरुथान के द्वारा) परमेश्वर सभी लोगों के चेहरे से सभी आँसू पोंछ डालेंगे, तब ये बात बाईबल संबंधी

व्याख्यों से पूरी तरह से मेल खाते हुए हमारे हृदय में आनंद की सिरहन कर देती है। `Z'08-154, 156` R4174:2; 4175:2 (Hymn 111) आमीन

रात का गीत (30 नवम्बर)

इब्रानियों 10:21,22 और इसलिये कि हमारा ऐसा महान याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है। तो आओ; हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ, ... परमेश्वर के समीप जाएं।

यदि परमेश्वर के बच्चे उनके बहुत समीप आएँ, और अपने पिता से लगातार मिलनेवाली स्वीकृति की मुस्कान को महसूस करने की धन्य आशीष पाएँ, तो उसे अवश्य ऐसा विवेक रखना चाहिए जो परमेश्वर और मनुष्यों के प्रति कोई भी अपराध से खाली हो-एक ऐसा विवेक होना चाहिए जो ईमानदारी से कह सके–

1) मैं वह करने का प्रयास कर रहा हूँ जो परमेश्वर को मनभावना है,

2) मैं वह करने का प्रयास कर रहा हूँ जो मेरी बलिदान की वाचा से पूरी तरह मेल खाता है

3) और मैं यह भी करने का प्रयास कर रहा हूँ जिसे, धर्मी मनुष्य की स्वीकृति मिले।

इससे कम ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसकी थोड़ी भी स्वीकृति उन्हें मिलेगी जिन्होंने राज-पदधारी याजकों का समाज बनने के लिए खुद को समर्पित किया है, ताकि वे अपने जीवन को परमेश्वर की सेवा में समर्पित कर दें, ताकि वे प्रभु के साथ राज्य भी कर सकें। आइये हम कभी भी न भुलें की जिसने हमारे अन्दर अच्छा काम शुरू किया है, वह कभी भी नहीं बदलता, और यदि हम अपने हृदयों को उसके साथ मेल में रखें, यदि हमारा भरोसा अभी भी ढृढ़ है और हमारे पापों का जो महान प्रायश्चित हुआ है, हमें स्पष्ट है और हम अपना सब कुछ बलिदान की वेदी पर चढ़ाकर लगातार अपने समर्पण को ताजा करते हैं, ताकि परमेश्वर अपने तरीके से हमारे बलिदानों को काम में लाये, अपनी इच्छा की कोशिश नहीं करते, अपने रास्ते पर नहीं चलते, लेकिन केवल उसकी इच्छा करते हैं तो हमारे पास पूरा भरोसा रखने का हर कारण है की, जो भला कार्य हममें शुरू हुआ है वह निश्चय पूरा होगा ताकि हम हमारे प्रभु के अनन्त राज्य में आनन्द से जा सकें और उनकी स्वीकृति के धन्य वचन को सुनें - “धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास” (मत्ती 25:21)। `Z'14-90` R5425:2,5 (Hymn 241) आमीन